॥ श्रीः ॥

अध्यात्मप्रकाश ।

कवि शुकदेवकृत



कवित्त, दोहे, सोरठे, छंद, चौपाई इत्यादिमें
वेदान्त विषय उत्तमतासे वर्णित है
"नारदजी" मुरादाबाद निवासी द्वारा
संशोधित और परिवर्द्धित ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बंबई.

संवत् १९८८, शके १८५३.

Bhagwan Gopinath Jee Trust Library
Date 1988
Price
Acc. No.
LIBRARY
Srinagar
Jammu
113

मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बम्बई.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षाधीन है।

श्रीरामकृष्णाभ्यां नमः ।

अथ अध्यात्मप्रकाशो लिख्यते ।

चकोर छन्द ।

स्थावरजंगमजीववजिते जगभांतिन भांतिन भेष-
धरे हैं ॥ तामहिसत्यचिदानन्दरूपसों आतम
एकप्रकाशकरे हैं ॥ ताविनुजानतेसिन्धुसोंलागत
जानते गोपदतुल्यतरे हैं ॥वन्दतताहिकहै सुखदेव
जु ब्रह्म सदासबहीतेपरे हैं ॥ १ ॥

दोहा—व्यासमथनकरि वेदसब,सूत्रजुकाढेसार ।
श्रीगुरुशंकरदेवजी, कीन्हो बहुविस्तार ॥ २ ॥
तिन्हग्रंथनकोसमुझिमत,धरचो जु पर उपकारु ॥
भाषाकरिसुखदेवजी,रच्यो ग्रन्थ अतिचारु ॥३॥
जैसेरविकेतेजते, अंधकारमिटिजाय ॥ अध्यातम

प्रकाशते, त्यों अज्ञाननशाय ॥ ४ ॥ गुरूशिष्य संवाद अरु, वेदवचन उपदेश॥ अध्यातमप्रकाश यह, भाषासरल सुवेश ॥५॥ अधिकारीजिज्ञासु अरु, शिष्यकहावतसोय ॥ तपसाबुनकरि देहके, पापन डारत धोय ॥ ६ ॥

छप्पय–वेदस्मृतिजेकहे धर्म्म अपने वर्णनके॥ तिन्हकर धोवै पापजन्मजन्मांतरनरके ॥ फलअ-भिलाषाछाँडकर्म्महहरिप्रीतकरैंसब ॥ हृदयविमल जलहोयज्ञानवैरागयोगतब ॥ श्रुतियुक्तिसहित उपदेश गुरुकरै शिष्यहियमें धरै ॥ विज्ञानसहित सुखदेवकविप्रगट ज्ञानमारगररै ॥ ७ ॥

कुंडलिया–जैसेवरषापायकै, जोतैखेतकिसान ॥ त्योंप्रारब्धै पायकै, देहसुकर्म्मनिजान॥देहसुकर्म्म निजानखैंचइंद्रियमनसोधै॥ बोवैवीर्यउपदेशवेदव चननिगुरुबोधै ॥ तबउपजैदृढ ज्ञानरीतिखेतीकरि

ऐसे ॥ अनभौफलयौंलहै सुखमारगजैसे ॥ ८ ॥

कवित्त–इन्द्रिनकोजीत्योगुणखैंच कीनो हाथ मनपरउपकारहीलौंतिनैभाइयतहै ॥ वेदकेबखानिवेकोसारासारजानिवेकोभेदग्रंथ भांतिबेकोरूपगाइयत है ॥ एकरूपपहिचान्यौं सबहिनमैंसोइ जान्यौं आपुतेनाजुदोमान्यौंसोवताइयतहै॥ ईश्वरलौध्यावैजीमें दृढभक्तिल्यावैतबऐसागुरुपावैतापैज्ञानपाइयत है ॥ ९ ॥

दोहा–गुरुसोंपूछैशिष्ययह,नमस्कारकरिध्यान॥नीकेकरमोसौंकहो,कासौंकहियतु ज्ञान॥१०॥ श्रीगुरु उवाच॥ भूलगयोअज्ञानते,अपनोआतमरूप ॥ ताहीकोफिरिजानिवो,ज्ञान कहतकविभूप ॥११॥ साधन चार कहेगुरु, प्रथम एकवैराग॥ पुनि विवेक समदमअवर, मुनि मुमुक्षु बडभाग ॥ १२ ॥ वैराग ॥ ब्रह्माइंद्रहिआदिजे, होतदेहध-

रिभोग॥काकवीटिसमतेगनै,बीतरागजेलोग १३॥
विवेक॥ देहप्रपञ्चअनित्यहै,आतमनित्यबखानि॥
सारासारहिजानिवो, यहविवेकसबमानि ॥१४॥

अथ शमदमसमाधिलक्षण ।

सावैया—वासनात्यागसदाशमहै दमइन्द्रियवृत्त
कोनग्रहठानै ॥ देखै नदोषविषेउपरामनिछावैहैदुः-
खजो सुःखनिमानै ।। साधनवेदअचारजकीसुप्र-
माणहिये सरधासोंबखानै॥एकह्वैचित्तसमाधिबसै
इहिभांति समाधि छसाधन जानै ॥ १५ ॥

अथ मुमुक्षु॥ दोहा—जन्ममृत्युसंसारते,कैसेछुटि
येमित्त ॥ सोमुमुक्षुकहिये सदा, यहैविचारतचित्त
॥ १६ ॥ चारोंसाधनजेकहे, तिन्हैंयुक्तिजबहोय।
तबजोपूछैआतमा,कहैगुरूपुनिसोय॥१७॥नमस्का
रकरजोरिकै, भेटहाथमेंल्याय ॥कहोगुरूजीआत-
मा,कैसेजान्योजाय॥१८॥श्रीगुरुउवाच ॥ शिष्य-

मुमुक्षुविचारिकै, बोले गुरूदयाल ॥ वहैकहतेहौं जो कह्यो, अर्जुनसोंगोपाल ॥ १९ ॥ सामवेदके वचन हैं,तत्त्वंअसिपदतीन ॥ जान्योइन्हकोअर्थ जिहि, लियोसार तिन्ह बीन ॥ २० ॥

चौबोला–तत्त्वंपदईशजीवत्त्वंपदहै असिपद है असिपदब्रह्मकहावै॥मायामेंयहतीनभेदहैं एकहि वेदबतावै ॥ २१ ॥ शिष्यउवाचकहोगुरूजीएक ब्रह्मतेतीनभेद क्यों भाषें ॥ कैसेभयेकौनकेलीने कौनरूपअभिलाषें ॥ २२ ॥ श्रीगुरुउवाच ॥ एकब्रह्मचैतन्यअखंडितततेउपजी इच्छा ॥ ताहीसोंमायाकहियतहै नीकेसुनिजैशिक्षा ॥२३॥ मायाजडचैतन्यब्रह्मकोतामेंभयोअभासा । सत रजतमत्रैगुणउपजायतातेद्वैतविलासा ॥ २४ ॥ माया और प्रतिबिंब ब्रह्मको गुणनि सहित दोउ कीन्हे ॥ एकमांझिसतगुणअधिकारी दूजोरजतम लीन्हे ॥ २५ ॥ सतगुणअधिक बिंबअरुमाया

सोई ईशकहायो ॥ तमगुणअधिकबिंबयुतमाया प्रगट जीवपदपायो ॥ २६ ॥

दोहा–बिंबभुलान्योअपनपौ, तमगुणके अधि. कार ॥ मायाकरवैचित्रता, कीन्हे जीव अपार ॥ ॥ २७ ॥ सोपाछेकरिकहैंगे,जीवनकोसबमर्म्म ॥ अबैकहतहैंईशको, रूपशीलगुणकर्म्म ॥ २८ ॥

अथ तत्त्वपदवर्णन ।

सवैया–शुद्धसतोगुणकेगुणतेप्रतिबिंबन आपुन भूलनपायो॥मायहिखैंचकियो अपनेवशईशवहैस र्वज्ञकहायो ॥ चौदहलोकरचेछिनमें अरुमेटतहै जबचाहैमिटायो॥ शक्तिअनंतकहैसुखदेवहैपुरु षोत्तमवेदनगायो ॥ २९ ॥

सवैया–आपुनहीचतुराननह्वै सुखथावरजंगम जीवउपावै ॥ रक्षाकरैसबकीहरिह्वैअरुजीविकाता

कातहींपहुँचावै ॥ रुद्रह्वै अन्त संहारकरै अरु आपुहिकालह्वैसृष्टिनशावै ॥ योंजगखेलविश्वंभरको जैसे बालकखेलीखिलौनामिटावै ॥ ३० ॥

दोहा–तीनदेहहैं ईशके, कारणसूक्षमथूल ॥ अबताकोवर्णनकरौं, पुरुषविराटसमूल ॥ ३१ ॥

चौपाई–प्रथमदेहकारणहैमाया ॥ ताके बल सबजकउपाया ॥ जाकी आदिनकोउलहै ॥ सत्य असत्यनवेदहुकहै ॥ ३२ ॥

दोहा–पंचतत्त्वतातेभये, पहिले सूक्षमरूप ॥ शब्दस्पर्शअरुरूपरस, गंधकहतकविभूप ॥३३॥

चौबोला–चौपाई ॥ तिनकीसूक्षमदेहभई जो हिरण्यगर्भ कहावै ॥ सबजीवनके आपुनहीं तेलिंगशरीरबनावै ॥ ३४ ॥

दोहा–इन्द्रियमनबुधिप्राणजे, सबके रचै विचार ॥ कहिये सूत्रजु आतमा, ताही सो निर-

धार ॥३५॥ थूलतत्त्वपंचीप्रगट, तिनतेसबब्रह्मंड॥
नभअरुपवनसुतेजमिलि, अरुपृथवीबहुखंड॥३६
थूलदेहजगदीशकी,थूलतत्त्वकीजान ॥ ताहीमेंसब
जीवकी, देहै लीजो मान ॥ ३७ ॥

कवित्त–शिरअवकासश्वासनासिका पवनवास
सूरशशिनैनमुखअनिलकोकरैहै ॥ हरिहरभुजा
दोउहियोचतुराननहैउदरसकल लोक वाणीवदर।
रैहै ॥ पर्वतहैं अस्थिरोमसकललोकबनसपतीमेघ
मालावीरजपातालपायतैरैहै। अलख अरूपजाकी
महिमाअनूपदेखोवह विश्वभूप वहैविश्वरूप धरैहैं
॥ ३८ ॥ शिष्य उवाच॥ दोहा॥समझोपुरुष विराट
जो, कीन्होआपुबखान ॥ कबतेहैकबलोंरहत,
कहिये सब परमान ॥ ३९ ॥ श्रीगुरुउवाच ॥
ब्रह्महीकी आयुसों, याकोबँध्योप्रमान ॥ सुनि
अबतोंसोंकहतहौं, ताकोसबैविधान ॥ ४० ॥

सवैया—सत्रहलाखहजारअठाइसहैं युगसत्यच-हूँपगजानो ॥ बारहलाखनवैछैहजारकोत्रेतातहांपगतीन बखानो ॥ आठऊलाखहजारसुचौंसठद्वापर द्वैपगधर्म्मके मानो ॥ चारसुलाखबत्तीसहजारको है कलियुगएकपगठहरानो ॥ ४१ ॥

दोहा—लाखतेतालिसवर्षअरु, बीतेबीसहजार। एकचौकरीयुगनकी, ताकोकह्योंविचार ॥ ४२ ॥ ऐतीऐतीचौकरी, युगनवजाहिंहजार ॥ ब्रह्माजूको एकदिन, तबकहियेनिरधार ॥ ४३ ॥ जेतेयुगको दिनकह्यो,तेतीहैपुनिरात ॥ सृष्टिरचीदिनकेउदय, रातिप्रलैह्वैजात ॥४४॥ ब्रह्माहीकेदिवसको, कल्प कहतसबतात ॥ जामैंचौदहइन्द्रह्वै, राज्यकरैंमरिजात ॥ ४५ ॥ वर्षतीनसैंसाठको, इनदिवसनको होय ॥ आयुदिव्यसौवर्षकी, ब्रह्माजूकी जोय ॥४६ ब्रह्माहीके जन्मसों, प्रगटहोत संसार ॥ महाप्रलय

हैंमरणते, यैहजाननिरधार ॥ ४७ ॥ कह्यौंकहाल-
गईशकी, मायाकोविस्तार ॥ याहीते संक्षेपसों
कछुकछुकियोविचार ॥ ४८ ॥ ततपदईश्वरकोक-
ह्यो, यहैसकलव्यौवहार ॥ अबसुनत्वंपदजीवको,
जोनशायसंसार ॥४९॥ अथत्वंपदवर्णन ॥ चौबो-
ला–पहिलेकहि उत्पत्तिईशकीवहैजीवकीजानौ ॥
वाकेशुद्धसतोगुणयाकेतमगुण अधिक बखानौ ॥
॥ ५० ॥ शिष्यउवाच । दोहा–सतरजतमयहतीन
गुण, मायातेकहिआय।तिनकेलक्षणकृपाकरि, मो
हिंदेहुसमुझाय ॥ श्रीगुरुउवाच॥सकलवस्तुकोज्ञा-
नअरु, बुद्धिविमलजबहोय । यहैसतोगुणजानिये,
कहतसयानेलोग५१लोभलियेव्योहारजो, सोरज
गुणपहिचान ॥ आलसनिद्राविकलता, मोहतमो
गुणमान॥५२॥ सवैया–सच्चिदानंदस्वरूपअखंड
सुआपुतमोगुणतेबिसरायो।एकतेजीवअनेकबनाये

सुमायाकियोअपनोमनभायो ॥ कारणदेहअवि-
द्यावहैअरुयाहीकोनामअज्ञानकहायो । सूक्ष्मथूल
उपाधिकोमूलवहैप्रतिकूलसुखानंदगायो ॥५३॥

दोहा—मायाकीद्वैशक्ति हैं, विक्षेप रु आवर्ण ॥
चेतनरूपभुलायकैं, ढांक्यौअंतः कर्ण ॥५४॥ शि-
ष्यउवाच ॥ मूलअविद्यातुमकही, सबउपाधिको
देव॥देहलिंगअरुथूलको,जान्यौचाहतभेव ॥५५॥

श्रीगुरुउवाच ॥ सवैया—नासिकानैनत्वचारसना
मिलकाननइन्द्रियज्ञानबखानो ॥ वाकनिपाण-
निपाँयउपस्थपदौमिलि पांचहिकर्मनिधानो ॥
प्राण अपानरुव्यानसमानउदानहिऔरमनोबुधि
सानो ॥ सूक्ष्मपांचहु तत्त्वनते यह सत्रहतत्त्वको
सूक्ष्मजानो ॥ ५६ ॥

शिष्यउवाच । दोहा—पांचतत्त्वसूक्ष्मनते, सत्र-
हक्योंकरकीन ॥ कहियेमोसौंप्रगटकरि, कामैको

परवीन ५७ ॥ श्रीगुरुउवाच ॥ वाक्यश्रवण आकाशते,प्रगटहोतयोंजान॥ वह बोलै वहईसुनै, दोऊशब्दनिदान ॥ ५८ ॥ त्वचामानिये पवनते, प्रगटहोत रे मित्त ॥ दोउ स्परसाहिधर्म्मकी नीके जानतचित्त ॥ ५९ ॥ नैनचरणयहतेजते, इन्द्रिय दोउकहाज़ु॥ वे चाहत जारूपको,यहलेजाततहांज़ु ॥ ६० ॥ रसनानाभीदोउभये, जलतेसुनरेतात ॥ जानत रसकेस्वादको, समुझिदेखियेबात ॥६१ ॥ मूल द्वार अरु नासिका, यह पृथिवीते दोय॥ वहैठिकानौगंधको, याहि ज्ञानसबहोय ॥ ६२ ॥ प्रान अपान समान अरु, व्यानउदानहिजान ॥ पांचठिकानेतेभये, एकैपवनबखान ॥ ६३ ॥ पांचभूतकेअंशमिल,उपजोमनअरुबुद्धि॥सबइन्द्रिनकेस्वादकी, हैताहीतेसुद्धि ॥ ६४ ॥ पांचप्राणद्वैबुद्धिमन,इन्द्रियदशौगिनाय ॥ पांचतत्त्वतेयौंभये,

सत्रहृदयेबताय ॥६५॥ कारणजोपहिलेकहे, अरु यालिंगसमेत ॥ कर्मभोगनिजकरनको, थूलदेहध-रलेत ॥ ६६ ॥ शिष्यउवाच ॥ कारणसूक्षमदेहद्वै, कहीसुसमझीदेव ॥ अबकहियेकरिकैकृपा, थूलदेह-कोभेव ॥ ६७ ॥ श्रीगुरुउ० ॥ चौबोला ॥ महा भूतपञ्चीकृतकरिकैसञ्चित कर्म्मउपावै ॥ सुख अरु दुखके भोग करनको थूलदेहछबिछावै ॥ ६८ ॥ शि० उ० ॥ दोहा–पञ्चीकृतसमझ्योनमैं, तुम जुकहीभगवान ॥ तातेफिरविस्तारसों, कीजै प्रगट विधान ॥ ६९ ॥ श्रीगुरुउवाच ॥ महिकठोरअरु द्रवतजल, तेजउष्णताजान ॥ चलतवायुखाली जहां, तहाँ अकाश बखान ॥ ७० ॥ एकतत्त्वके पांचकर, पांचनतेपच्चीस ॥ पांचअंशन्यारेरहैं, मिश्रितकीने बीस ॥ ७१ ॥

छप्पय–अस्थिमांसत्वकरोमनाडिका प्रगटपञ्च-भुय । रक्तपित्त अरुस्वेदलारपुनिरुधिरनीरहुय ॥

भूख प्यास सुखप्रभा नींद आलसहितेजगनि ॥ धावनि कूदनि चलनि पसारनि सकुच सुपनभनि॥ शिरकण्ठ हृदय अरु उदर कटि यह अकाश विधिपञ्चलहि ॥ पञ्चभूतपञ्चीकरनकारि पच्चीससुखदेवकहि ॥ ७२ ॥

दोहा–एकएककेपांचकारि, कहेसुसबपच्चीस ॥ कौनतत्त्वमेंकोमिल्यौ, सुनौचित्तदेबीस ॥ ७३ ॥ एक एकके नौकरे, पाँचनपैंतालीस॥ पाँचराखिचालीसके, मिश्रितकीनेबीस॥७४॥बीजमुख्यपृथिवी रही, मांसनीरनसतेजु ॥ त्वचापवनमिलिकैभई, रोमअकासकहेजु ॥ ७५ ॥ बीजमुख्यजलजानिये, पित्ततेजमिलहोय ॥ स्वेदपवनभूरुधिरमय, लारगगनयुतजोय ॥ ७६ ॥ क्षुधामुख्यतेजरह्यो, प्यासपवनमयमानि ॥ सुखमाजलआलस अवनि, नींदअकामबखानि ॥ ७७ ॥ धावन

मृख्व्यसमीरहै, गगनपसारनमाहि ॥ कूदनिते-
जसकोचभू, चलननीरबिनुनाहि ॥७८॥ शिरअ-
कासजोशब्दमय, कंठवायहियतेजु ॥ उदरनीरयु-
तजानिये, कटिभूगंधकहेजु ॥७९॥ भूमस्थलज-
लरेतअरु, तेजभूखपहिचान ॥धावनिपवनअकास
शिर, पांचनिखालसजान ॥ ८० ॥पांचअंशयेरा-
खिकै, भयेबीसयोंलीन ॥ ज्योंनरघटपटपरस्पर,
बदलत परमप्रवीन ॥ ८१ ॥ यहसबपंचीकरनको-
तोसोंकह्योविचार ॥ थूलदेहधरजीवयह, करतभो-
गसंसार ॥ ८२ ॥ तीनदेहतोसोंकही, कारणसूक्षम
थूल॥पंचकोशके भेदपुनि,ताहीमध्यसमूल॥८३॥
कवित्त–अन्नमयथूलजातपवनप्राणमयमानपांच
कर्म्मइन्द्री अरुमनमनोमयहै ॥ पांचज्ञान इन्द्री
और बुद्धि है विज्ञानमय कारण अविद्या सोतौ

आनँदमैंलयहै ॥ तीनदेहमांझ पंचकोश सुखदेवक-हैंनोकेकैविचारदेखभ्रमहींको भयहै॥कोसुन्हैनको-ऊकहैदेहैहैनसोऊ एक आत्माको जाने सोतो आनंदकोचयहै ॥ ८४ ॥

शिष्यउवाच॥चौबोला-संचितकर्म्मनतेपहिले हीथूलदेहतुमभाषी ॥ कर्मनकेलक्षणसुनवेकोमेरीमतिअभिलाषी॥८५॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा—संचितअरुप्रारब्धये, क्रीयमानत्रयकर्म ॥ सुन हों तोसौंकहतहों, तिनके अद्भुतमर्म्म ॥८६॥ एक जन्मकेकर्म्मफल, भोगैजन्मअनेक ॥ संचित तो-सौंकहतहैं, सुखदुखसहितविवेक ॥ ८७ ॥एकज-न्मकेकर्म्मफल, भोगैदूजीदेह ॥ सोप्रारब्धकहावई, सुनअबसहितसनेह ॥ ८८ ॥

सवैया—गर्भवसैनरऔपशुदेहजरायुज योनित-हांपदपावै॥ पक्षीपतंगपिपीलन माबहुअंडजयोनि

तहां छबिछावै ॥ स्वेदतेस्वेदजकीउत्पत्तिजुचील-
रऔरजुवाँजोकहावै ॥ उद्भिजवृक्षतिनूकनिलौंइ-
हिभांतिजोजीवनकर्मबनावै ॥ ८९ ॥ कीटपतंग
करैपशुपक्षिअधोगतिमेंजलजीवनिभावै।कैसुरलो-
कबसैसुरह्वै कबहूँसुरराजकिसंपतिपावै।मानसह्वैसु-
खदुःखसहैधरनीचकेऊँचकेलैप्रगटावै॥ आतमए-
कविचारविनायहिभांतिसोजीवनकर्मबनावै॥९०॥
पुण्यकरैसुरलोकलहै अतिपापनतेसबनर्कनिधावै॥
पुण्यरुपापसमानदोऊमहिमानुषह्वै कुलमें छबि
छावै॥ जो सुखदेव लिलार लिख्यो सुघटै न बढै
अरुजायन आवै ॥ आतमएकविचारविनायहिभां
तिसुजीवनकर्म्मबनावै ॥ ९१ ॥ जागतमेंसब
विश्वबनायविलासकरैवसनैननहेरै ॥ ताहिकीवा-
सनावासितह्वैस्वपनेमहमोहमनोरथघेरै । सूक्षमथू-
लशरीरदोऊश्रमतेहितहोतसुखोपतिनेरै॥ तीनअ-
वस्थनमेंसुखदुःखलहैसुतौएकअदृष्टकेप्रेरै ॥ ९२॥

दोहा-इक्षानिक्षपरेक्षसों, त्रिविधकर्मकेभोग ॥
जन्मआदिअरुअन्तलौं, कहतविवेकीलोग॥१३॥
कर्म्महोतप्रारब्धते, मूरखजानतनाहि ॥ मानले-
तअबमैंकरे, क्रीयमानते आहि॥१४॥जन्मधरावत
तेकरम, मानिलेतपुनिअज्ञ।वेईहैंप्रारब्धते, मानतहैं
योंतज्ञ॥१५।ज्ञानउदयहियहोतही,संचितकर्म्मवि-
लात ॥ क्रीयमानहोतेनहीं, प्रारब्धैरहिजात ॥१६॥
देहतीनमेंजीवकी, कहीसहितविस्तार ।जातेतेरेचि-
त्तमें, उपजैब्रह्मविचार ॥ १७ ॥ पाँचभूततेदेहयह,
ताकोझूठीजान । सांचोएकैआतमा, सोविचार-
करमान ॥ १८ ॥

सवैया-भौतिकदेहसदाजडहै वहआतमचेतन
ज्योतिहिसानौ ॥ देहअनित्यमरैजनमैवहआतम
नित्यअखंडित जानौ॥देखियेदेह अमंगल रूपसो
आतमशुद्ध अदृष्टबखानौ ॥ ताकोआपकहैनरमूढ
कहांउनतेपशुऔरहैमानौं ॥ १९ ॥

दोहा–षटविकारहैं देहको, तेआतमके नाहिं ॥
सुनअबतिनकोनामपुनि,समुझिदेखमनमाहिं १००
उपजतहै अरुढबतहै, बालयुवा पुनि होय ॥ वृद्ध
होतपुनिमरत है, षटविकारहै जोय ॥ १०१ ॥
सवैया–शौच अशुद्धभरीदुर्गन्धलसैबहुखंडसुथू-
लनिहारो ॥ रोगग्रसैबहुभांतिजरैसिथिलैपुनि आ-
मिषअध्रुवछारो ॥ होतनहोतघनेदिनमेंछिनमेंमि-
टिजातनलागतवारो ॥ देहसदादशदोषभरीयह
आतमब्रह्म अदोषविचारो ॥ १०२ ॥
दोहा–वेदकहतअरुमैंकहत,तूपुनिचित्तविचार ॥
आतमचेतननित्यहै,देहअनित्यनिहार ॥ १०३ ॥
शिष्य उवाच ॥ तुमजुकहीसोंसबलखी, थूलदेहमें
नाहि ॥ याहिछोडऔरैधरत, लिङ्गदेहमयआहि
॥ १०४ ॥ श्रीगुरुरुवाच । पंचभूतजडतेभई,
सूक्षमकीउत्पत्य ॥ अलखअनादिअखंडहै, तूतो
आतमसत्य ॥ १०५ ॥ शिष्य उवाच ॥ देहहोत

चैतन्यजिहि, इन्द्रिय तिहिसमतूल॥प्राणहोयक्यों औरनहिं, यहौकहतअतिभूल॥१०६॥गुरुरुवाच॥ सोवतमें भूषणहरत, जानतनाहीं कोय॥ प्राण होतचैतन्यतौ; चोरहिपकरतसोयप ॥१०७॥

सवैया—कानकोकामनानाककरै, अरुनाकको कामनाकानपैहोई॥आँखकोकामनाजीभकरै,अरु जीभकोकामनाआँखिनजोई॥ हाथकोकामनापा यँकरैं, अरुपायँकोकामनाहाथनसोई॥जानतआप- नेस्वादनकोदश,इन्द्रिनमांझनचेतनकोई॥१०८॥

शिष्यउवाच॥ दोहा—स्वादपरस्परऔरके, इन्द्रियजानतनाहिं॥ताते ये जडहैं सबै, हौंचे- तनमनमाहिं॥ १०९॥ श्रीगुरुरुवाच॥

दोहा—पंचतत्त्वकेअंशते, मनउपज्योयहिजान॥ सबइन्द्रिनकेस्वादसों, तातेहैपहिचान॥ ११०॥ बातसुनतहूसुनतनहिं, कहतनाहिंमनठौर॥तातेय हैविचारिये, चेतनहैकोइऔर॥१११॥ सुखपतिइ-

न्द्रियसहितमन,मिलतअविद्यामाहिं ॥ जागतहैत-
बकहतहै,आजकछूसुधिनाहिं ॥ १२ ॥ स्वप्न्योहै
देख्यौकछू,सोयगयोयहिरीत । यहजानीजिहिज्ञा-
नसों,यहैज्ञानकीरीत ॥ १३ ॥ पञ्चतत्त्वतेहोतमन,
ज्ञानभयेमिटिजात ॥ ताकोनरस्वरकहतहैं, जाको
उत्पतिपात॥१४॥ सदाअनादिअनंतहैं, सोआतम
तूआय । तातेयहैविचारिकै, छोडअज्ञकेभाय १५
शिष्य उवाच॥सत्रहमैंसोरहकहैं,रहीजुवाकीबुद्धि ।
जानतहौंचेतनवहै, जाकोसबकीशुद्धि ॥ १६ ॥
श्रीगुरुरुवाच ॥ अहंकारमनबुद्धिचित, एककहतहै
चार॥एककहतहैबुद्धिमन,अंतःकरणनिहार ॥१७॥
जैसेएकहिपवनके,प्राणहुयेहैंपाँच ॥ तैसे अंतःकर-
णके, भेदचारपुनिसांच ॥ १८ ॥ जबचाहतहैंवस्तु
कछु, चित्तकहतहैंताहि॥यतनकलपनाजबकरै, मन
कहियेपुनिवाहि ॥ १९ ॥ मैंयहलीन्हेंलेतहौं,अहं-
कारयहजोय ॥ सबकी जब निश्चयकरै, बुद्धि

नामहैसोय॥१२०॥ जैसेब्राह्मणएकही, नामक्रिया तेदोय। रोटी करै रसोइयाँ, पढै सो पंडित होय ॥ २१ ॥ बुद्धिते परे जो आत्म है, यहजुकही भगवान ॥ अरुपुनिआतमबोधसो, शंकरबोध निधान ॥ २२ ॥ परेहैइन्द्रियदेहते, मनइंद्रियते जोय ॥ बुद्धिकहीमनतेपरे, बुद्धिते आतमसोय ॥ २३ ॥ सुखदुखइच्छारागये, सबैबुद्धिकोधर्म्म॥ सुषुपतिमेंयहसबमिटत, रहत आत्मापर्म्म॥२४॥ शिष्य उवाच ॥ कह्योआपसमझोसुमैं, देहदोयहों नाहिं ॥ अबआतमकासोंकहौं, याशरीरके माहिं ॥ २५ ॥ श्रीगुरुरुवाच । न्यारेन्यारेतैंलखे, सबहीकेगुणरूप ॥ जानतनाहींआपको, यहै अजानअनूप ॥ २६ ॥ कारणमूलउपाधिको, यहै तीसरीदेह ॥ आदि न ताकी जानिये, अंतज्ञानके गेह॥२७॥अहंकारबुधिसोकहै, तूजिनदेहिजगाय॥ उठिहै परमानंदतब, मैंतू जग न समाय ॥ २८ ॥

यहै अविद्यानींद है, स्वप्नतुल्यसंसार ॥ ब्रह्मल-
खैजबआपको, जागितवहैंविचार ॥ २९ ॥ शिष्य
उवाच ॥ रूपकौनहैब्रह्मको, काविधबसैशरीर ॥
कहियेमोसोंकरकृपा, ज्योंनशायभ्रमभीर॥१३०॥

श्रीगुरुरुवाच॥कवित्त–मनबुद्धिइन्द्रियकोकार-
णचलायवेको सकलउपाधिनतेन्यारोरहै गातमें ॥
जैसे घटघटमांझ व्यापकअकासअरुन्यारोसुखदु-
खनतेदरुयौअवदातमें ॥ तैसेरविज्योतिआगेसो-
वतते जीवजागै उठिउठिकामलागैसबैपरभातमें ।
अज अविनाशीपरिपूरणप्रकाशी सुखदेवसुखरा-
शीऐसेब्रह्मलखिआतमें ॥३१॥देहकेप्रकाशकहैका-
ठमाहिंअग्निजैसेचेतनप्रकाशकहैमनबुद्धिगातमें ॥
मनचक्षुरादिहूते न्यारो सबकालजानमनचक्षुरादि
हूंकोमनचक्षुतातमें ॥ मनचक्षुरादिनते पाइये
न रूप जाको अतिही अरूप एक अद्भुत
बतातमें ॥ अज अविनाशी परिपूरणप्रकाशी ऐसे

नित्यलखि सुखदेव सुखराशी आतमें ॥ ३२ ॥
मुखको अभास जैसे दर्पणमेंदेखियतमुखतेनन्यारो ताहिगनियतवातमें ॥ ऐसेब्रह्मचेतनको बुद्धिमेंअभासपरचोताहीसों कहतजीवबहुविधगातमें ॥दर्पणकेटारेप्रतिबिंबमिटजात जैसे ब्रह्मकेविचारेसों जीवमिटजातहै ॥ अजअविनाशीपरिपूरणप्रकाशी सुखदेवसुखराशीऐसोनित्यलाखिआतमैं॥ ३३ ॥
रविकोप्रकाशपायलोचनविलोकैरूप तैसेरविब्रह्मकैप्रकाशतवदातमैं ॥ जैसेएकसूतमांझमणिकन पोहियततैसेएकचेतनहैबुद्धिनकेगातमैं ॥ सबहिमेंएकवहैसबहितेन्यारो रहै गगनके समाननमिलतकाहुबातमैं ॥ अजअविनाशीपरिपूरणप्रकाशी सुखदेवसुखराशी ऐसोनित्यलखिआतमैं ॥ ३४ ॥
सदचिदआनंदस्वरूप एकआतमाको बिंबपरे बुद्धिनअनेकलखियतुहै । जैसेएकरविकेअनेकहीघटन माहिंजलकोप्रतापन्यारोन्यारोपेखियतु है । कर्म-

नकेवशजीव दुःखसुखभोग करै नीचऊंचमध्ययो-
निमध्यपेषियतुहै ॥ पवनकेवशजैसेसरवरनिकंपे-
जलचंचल हैकोऊकोऊथिरदेखियतुहै ॥ ३५ ॥
दृष्टिकोछिपावै घनअज्ञजानै भानुछिपैऐसे शुद्ध आ-
त्माकोबंधननमान्यो है ॥ कहैसुखदेवजैसेश्वेतम-
णिमेंनरंगपासधरैजाकेताको रंगमानोसान्यो है ॥
जैसेजलमांझपरैचंद्रप्रतिबिंबआनिजलकेहलत वहै
हालतसोजान्यो है ॥ ऐसेजडबुद्धिमांहिंदेखिप्रति-
बिंबब्रह्ममूढनलैब्रह्मको जगतमाहिं सान्योहै ॥ ३६ ॥

शिष्य उवाच ॥ दोहा—ममस्वरूपहै आत्मा,
जडशरीरसोनाहिं ॥ विषयभोगकोकरतहै, यहसं-
शयमनमाहिं ॥ ३७ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ विषयभो-
गव्यंजनरचे, थारीथूलशरीर ॥ इन्द्रियकरसोकर-
तहै, भोगबुद्धिमनधीर ॥ ३८ ॥ इच्छासुखदुख
दोषअरु, धृतचेतनसंघात ॥ यहसबक्षेत्रजुधर्महै,
न्यारोआतमतात ॥ ३९ ॥ देहकहतहैआपसों,

तबलौंकहियेअज्ञ ॥ ब्रह्मलखैज्ञानीवहै, आतमअ-
ज्ञनतज्ञ ॥ १४० ॥ तूछूटचोसंसारते, निःसंदेह
रहिनित्य ॥ लख्यौ आपुको आत्मा, यहैमुक्तिहै
मित्त ॥ ४१ ॥

कवित्त–सदचितआनंदस्वरूपसुप्रकाशजाको
समसबहीकेउरअंतररहत है॥अचलअखंडअजअ-
क्रियअनंतगतिअद्वैअरूपइन्द्रीमननागहतहै। निर-
विकारनिराधारनिर्विकल्पनिराकारकूटवत निर्गुण
निरंतरलहत है ॥ आत्माकोब्रह्मजानैदेहकोअस-
क्तिमानैपंडितसयानेज्ञानताहीसोकहतहै ॥ ४२ ॥

दोहा–वर्णाश्रमअभिमानहै,जबलगजियमेंमान ।
वेदस्मृतिकी आज्ञा, येहैंसहीप्रमान ॥ ४३ ॥

कवित्त–पापअरुपुण्यदोउ पहियाप्रबलजाके
लोकअरुवेदरीतवासनाकीवारिकै ॥ कामक्रोध
लोभमोहकीलनसोंराख्योजर कहैं सुखदेव अब
कर्म्मनिविचारकैं ॥ वर्णाश्रमऔर अभिमानकी

जंजीरजानसुःखऔरदुःखके किवार तोरडारिकै ॥ भ्रमकोनिवाररूपअपनोसम्हारसिंह निकस्योप्रबोध जबपींजराकोफारिकै॥४४॥शिष्य उवाच॥देहनाहींइन्द्रीनाहींमनबुद्धिप्राणनाहींकारणअविद्यानहींऔरसुखजकहों॥वर्णाश्रमनाहींजातिकुल धर्म्मनाहीं करता अरु कर्मनाहीं भोगतानजेकहौं ॥ मायाको विलासनाहींईशकोप्रकाशनाहींजिवचिदाभासनाहींभांतिभांतिभेषहौं॥जाग्रतसुपनसुषुपति कोलखैयासदा तुरीयाप्रगटबोधरूपब्रह्मएकहौं ४५

दोहा—यहतौजान्यो आत्मा, तुमप्रसादतेदेव ॥ अबैकहीजैतत्त्वमसि, जोकहिवेहैभेव ॥ ४६ ॥

श्रीगुरुरुवाच ॥ यहसबत्वंपदरूपको, तोहिंसुनायो रूप॥अब सुन असिपद ब्रह्मको जो है सबको भूप ॥४७॥इतित्वंपदार्थ ॥ अथअसिपदार्थ ॥ तत्पद ईश्वरको कहत,त्वंपदजीव बखान ॥ असिपदब्रह्म

अलिप्तहै, वहैदोउमेंजान ॥ ४८ ॥ वहईश्वरसर्व-
ज्ञहै, जीवसदाअलपज्ञ ॥ समकहियेजोदुहुँनको
तौनजानियेअज्ञ ॥४९॥ तत्पदमानोसिंधुहै, त्वं-
पदबूंदसमान ॥ असिपदपानीदोउमें, ताहि एकक-
रजान ॥१५०॥ तत्पदजैसेभूपहै, त्वंपदमनहुकि-
सान ॥ असिपदमानसकोकहत, ऐसेजानोज्ञान५१
शिष्य उवाच ॥ देवदत्तइकनामयहि, मिल्योविभ-
वयुतमित्त ॥ फिरवहदेखौंविपतियुत, कैसआवेचित्त
॥ ५२ ॥ ईश्वरकीसर्वज्ञता, सोमायातेजान ॥
जीवनकीअलपज्ञता, ताहिअविद्यामान ॥ ५३ ॥
वासमयेकोविभवतजि, अबकीतजौविपत्ति ॥ दृष्टि
करोजोदेहपर, तोवहइहहैसत्ति ॥ ५४ ॥ जेउपाधि
केमूलहैं, तिनकोझूँठेजान ॥ शुद्धरूपजोब्रह्महै, एक
आत्मामान ॥५५॥ जैसीदेहहैजीवकी, तैसीहैज-
गदीश॥न्यारीन्यारीकहतहौं, दोउएककारिरीस५६

कवित्त–जैसीदेहवाके ब्रह्माण्डअखंडरूपतैसेया केथूलजामेंहाथपायँलेखिये ॥ वाकेहैहिरण्यगर्भदू-सरोशरीरयाकेसूक्ष्मकहावैतत्त्वसत्रहसुपेषिये। वाके आदिमायाजातेहोतसब काजसिद्ध याकेहै अविद्या जातेभूल्योअबरेखिये।वासोंजगदीशयासोंजीवकरी डारैएकब्रह्मकोविचारेतौनजीवईशदेखिये ॥ ५७॥
दोहा–तजैईशकीईशता, और जीव अविवेक ॥ तीनोंपदको अर्थयह, तत्त्वं असिहैएक॥५८॥तत्त्वं तुहीहै यह कह्यो, तत्त्वंपदकोअर्थ॥ यहीवृत्तिजाके भई, सोसबभांतिसमर्थ ॥ ५९ ॥सामवेदके वचन को, कह्योसबै विस्तार॥तैसे चारोंवेदके, महावचन हैंसार ॥१६०॥ अहंब्रह्मेतियजुर्वेदः ॥ १ ॥ प्रज्ञा-नमानन्दंब्रह्मतिऋग्वेदः॥२॥ अयमात्माब्रह्मेति अ-थर्वणः॥३॥ तत्त्वमसीतिसामवेदः ॥४॥ इतिमहा वाक्यानिमहापूर्वाणि ॥ दोहा–ईशजीव अरु ब्रह्म हैं, जैसो एक बखान । यहै अर्थसब वचनको

बुधिबलजामो ज्ञान ॥६१॥सदचिद हैं आनन्दजे, अचल अखंड अनंत ॥ स्वप्रकाश कूटस्थ अज, अक्रियब्रह्म अनंत ॥६२॥ शिष्यउवाच ॥ द्वादश एकैब्रह्मके, कहेबिशेषण नाम । न्यारेन्यारेकरिकहो, अबतिनकेगुणग्राम ॥ ६३ ॥

श्रीगुरुरुवाच । कवित्त–जाग्रतस्वपनकाजहोत । जाकीचेतनासोंसुषुपतिहूमेंहै साक्षीलौं विशेखिये । तीनहूंअवस्थनमेंभावाभावरूपतुरीयास्वरूप याको एकरसअवरेखिये ॥ जैसेलोहचुंबकसमीपकरैचेष्टा-कोतैसे देह इन्द्रीमन आतम सोलेखिये ॥ एकरूप जगमें जगमगतजाकीज्योति जहांतहां जान चित्त चेतन सुदेखिये ॥ ६४ ॥

दोहा–सोसदब्रह्मस्वरूपहै, ज्ञानविनानलखाय । जीवजुन्यारो ब्रह्मते, भयो असत्या पाय ॥६५॥

आनंदस्वरूपछंद–देखैसुनेसूंघेखायचंदन त्वच कोलगाय वचनबनावेनीके जाकोजेलगतहै । हाथ

नग्रहणकरैपाँयनचलनकरैजोईहियेधरै ताहिसुखमें
पगतहै ॥कहैसुखदेवविषैमिलमनभावतीतौसुखसों
लगतताछेमनहीपगतहै ॥ आनंदस्वरूपब्रह्मआनंद
अखंडजानिस्वपनेकोआनँदसोआनँदपगतहै ६६॥
अद्वैत। दोहा–एक आत्मावसतहै,थावरजंगमदेह।
जैसमणिकामालके, सूतमाँझगुहिलेत ॥ ६७ ॥
अखंडलक्षण।सवैया–नाहिंनजाकीसुजातकहूँअरु
दूसरिजातिसोकौनगनावै । आपहीमाहिंनभेदकछू
श्रुति नासिकानैनरुपाइनधावै ॥ रंगनरूप न वेद
कहैमनइंद्रिनकेसुनकैसेहुपावै ॥ चेतनएकअखण्ड
स्वरूपकहेसुखआपुकोआप लखावै ॥ ६८ ॥
दोहा–देहहोतअरुमिटतहै, तातेंचचलमान ॥
जन्ममृत्युजाकेनहीं, आतम अचलबखान ॥६९॥
अजत्व॥घटकोकारणमृत्तिका,ब्रह्मजगत्को जान।
आदिरहितकारणरहित, अजकरताहिबखान ७०
आतमहैअक्रियसदा, देहक्रियाबुधरूप ॥जैसेदीप

प्रकाशते, खेलतज्वारीजूप॥७१॥ विषै बुद्धिपातु-
रनचै,अहंकारढिगभूप॥इन्द्रीतालमृदंगयुत, आत-
मद्दीपस्वरूप ॥ ७२ ॥ जाके नहीं विकार कछु,
रहतकूटवतनित्त ॥ सोकूटस्थकहावई, समुझिदेख
चितमित्त ॥ ७३ ॥

अथ अनंत कवित्त–प्रथमहिंमायामेंप्रवेशह्वैआ-
कासवायुतेजनीरपृथ्वीमोंव्यापकगनंतहै॥थिरचर-
जीवजेतेजगमेंजगमगतसबमेंप्रगटएकचेतन भनंत
है।ऐसेघटमठमध्यव्यापकआकाशअरुकहैंसुखदेव
यहू पहिलेसनंतहैं॥ रूपहैनरेखजाकीमहिमा अनं-
तताकीआदिहैनअन्ततातेआत्माअनन्तहै ॥७४॥
अथस्वरूपस्वप्रकाशलक्षण ॥ औरवस्तु चाहिये
तौदीपकप्रकाशियतदीपकके चाहिवेकोदीपकनचा-
हिये॥ औरसबदेखिवेकोआंखिसुखदेवजैसेआंखि-
नकेदेखिवेकोकौनअवगाहिये ॥ रविको प्रकाश

पायसबमेंप्रकाशहोतरविमोंप्रकाशजैसे सो तहाँस-
रा राहिये । अग्निहीमेंदाहशक्तिआपहीतेहोत जैसे
तैसे सुप्रकाशएकआत्मासुआहिये॥७५॥ ब्रह्म क-
वित्त ।शेषकेसहस्रमुखजीभद्वैहजारतातेनयेनयेनाम
नितलेतहीरहतुहे॥ एकब्रह्मअंडजाकीपावत नपार
कोऊ ऐसेऐसेकोटिकोटिरोमलहियतुहे ॥ कहें
सुखदेवएक अद्वैतपुरुषजासों नेतिनेति कहीना
प्रमाणचहियतु है ॥ सदचिदआनँदस्वरूपअवि-
नाशीपरिपूरणप्रगटपरब्रह्मकहियतुहे ॥ ७६ ॥
दोहा–यहद्वादशविस्तारमों, कहेविशेषणचारु ।
ऐसजानैआपको, यहैवेदकोसारु ॥ ७७ ॥
शिष्य उवाच ॥ न्यारेन्यारेसब कहे, बलविक्रम
अरुनाम ॥ रूपकहाहै ब्रह्मको, लहौंज्ञानकोधाम
॥७८॥श्रीगुरुरुवाच ॥ अप्रमाण अद्वैतहै, अरु
चैतन्यसुभाय ।।मनइन्द्रियगहिसकतिनहिं, क्यों
करवरण्योजाय ॥ ७९ ॥

कवित्त–काननकोनादनाहीजीभकोसवादनाहीं वचनकोवादनाहींजुगतिसोंजोकहै।।आँखिको दिखात्र नाहीं नाकको सुंघावनाहींकरकोगहाव नाहीं पायँकिनरोकहै।।मनकरिजानोनाहीं बुद्धिउन मान नाहीं दूसरोप्रमाणनाहींप्रगटऐसोकहै।। असतप्रपंचकैसे सत्यपहिचानैं आपआपुसुखजानैदूजोमाने बिनकोकहै ।। १८० ।।

दोहा–एकब्रह्म अद्वैतहै, ताकी उपमाकौन ।।
विनउपमासमझतनहीं, अज्ञकहावतजौन ।।८१।।
जोलक्षणआकाशको, वहैब्रह्मकोदेख ।।यहजडवह चैतन्यहै, यहैभेदपुनिलेख ।। ८२ ।।

कवित्त–व्योमहीमें सातद्वुर सातलहैं सातलोक व्योंमहींकेमांझलोकालोकलखियतुहैं । व्योममेंजगतऔरजगतमेंव्योमऐसे घटमांझ अरुन्यारोदेखियतुहैं।। कहैसुखदेवजैसेजीवईशभेदवामेंतैसेघटमठ

भेदयामेंपेखियतुहै । औरसबलक्षणसमानजान व्योमकेपरब्रह्ममांझचेतनतासोविशेषियतुहै॥८३॥

शिष्य उवाच ॥ दोहा–कह्योप्रपंचअशक्तिको, शक्तिब्रह्मसोंएक ॥ दूजोभयोअशक्ति क्यों, रहैएक-कोटेक ॥ ८४ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ एकैकेवलब्रह्महै, भेदप्रपंचनमान ।नित्यअनित्यविवेककरि,दूरकरत अज्ञान ॥ ८५॥ जोकहतेयहपहिलही, देहआत्मा एक ॥ तौआतमनहिंजानतेउ, गहिलेतेउँयह टेक ॥८६॥ देहआत्माभिन्नकहि, देहममतछुटि जाय ॥ भयो आत्माआपजब, तबसबएकै आय ॥८७॥ अरिल्ल ॥ एकब्रह्मअद्वैतभेदकहब्रह्मवेद है ॥ और भेदकछुनाहिंभेदअनभेद है॥यहैबादअद्वैतसिद्धकर हीगहौ॥ जानआपुकोआपमुक्ति पदकोलहौ ॥८८ दोहा ॥ जगकोकारणब्रह्महै, यहनिश्चयकरजोय ॥ भूलनमनमेंलाइये कारज कारणदोय॥८९॥शिष्य उवाच ॥ कारणतो दो भांतिहैं, उपादाननिरमित्त ॥

कहियेतामें कौनहै, वहअविनाशीनित्त ॥१९०॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ कारणएकैब्रह्महै, दोउभांति तिहि जान।उपादानअब कहतहै, फिरनिर्मित्तबखान९१

कवित्त-माटीसों कहत घट काठसोंकहतमठसूत-सोंकहतपटपीतपाटआनेते,लोहेसोंकटारीकहैपीत्त रसोझारीकहैकांसीतों कहतथारी भोजन कसानेते। कहैसुखदेवजैसेजलसोंतरंगकहैंतुंगकहैं तांबेमांझरां गलपटानेते,कंचनसोंकंकअरुकिंकणीकहततैसेब्रह्म सोजगतकहैआपविनुजानेते ९२ गंध्रबनगरजैसेवा दरमैं देखियतनीलताअकाशमांझखालीकोमरमहै। जैसे सूखेठूंडआगेपुरुषसों निशिलागे जेवरीअंधेरे मांझसांपजोभरमहै।कहैंसुखदेवजैसेफटिककोहिरा जानैलालकोअंगारमानैजानतगरमहै।रूपौसीपश्वेत नमेंनीरलखैरेतनमेंऐसेब्रह्मचेतनमेंनगकोभरमहै९३ चसमाकेदियेजैसे छोटोहूबडो तो लागै दूरते नि-हारैबडोछोटोसोंलगतहै॥ काचकीधरणिमांझनीर

ऐसोदेखियतनीरमांझकहूंकहूँ काचसोंलगत है।
नावकेचलतरूखतीरकेचलतलागेबादरके दौरे मा-
नोचन्द्रमाभगतहै।जैसोइन्द्रजालभ्रमपांखकापेरेवा
भासैजैसे ब्रह्मचेतनतेभासतजगतहै ॥९४॥ शिष्य
उवाच ॥ दोहा-ब्रह्मनित्यचैतन्यहैं, जगअनित्य
जडजान ॥ उपादानक्योंकरभयो, जडकोचेतन-
आन ॥९५॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ चेतनतेजडहोतहै,
जडतेचेतनहोय॥यह प्रत्यक्षहिदेखिके,संशय डारौ
धोय॥९६॥यह शरीरचैतन्यहैं,तातेनखजडहोय ॥
गोबरजडतेहो प्रगट, गुबरीलाचितजोय ॥९७॥
शिष्य उवाच॥ दोहा-यहतोजानीजोकही,
उपादानकीरीत॥अबनिमित्तकिहिभांतिहै, सोक-
हिये करमीत ॥ ९८ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा ॥
सांख्यवेदऔरस्मृतिके, कहेग्रंथबढिजाय ॥ ताते
उपमा युक्तिसों, प्रगटदेतसमझाय ॥ ९९ ॥
कवित्त-जैसेघटकारजको कारण कहत दोई

उपादानमाटी औ निमित्त जो कुम्हारहै ॥ ऐसे पांचतत्त्वगुणतीन ह्वै जगतभयौ, आपनही जीव-ईश आपकरतारहै॥ माटी औ कुम्हारन्यारोएकह तसोचभारोतातेऔरउपमादैंकियो निरधारहे । जालाहै निमित्तउपादान जैसेमकरी है तैसी भांति जगको विचारब्रह्मचारहै ॥ २०० ॥

दोहा—कारजकारणकरकह्यो,यहतो सों व्यवहार। कारजकारणतेंपरे, सोहैतत्त्व विचार ॥ २०१ ॥

कुण्डलिया॥जैसे घटको घटकहैं,माटीकारणजोय, घटतजमाटीही रही,काकोकारणहोय । कारणका-कोहोययहकारजऐसेजानो॥ जगतब्रम्हजोकहैप्रगट निरुपाधिबखानो ॥ पुत्रपितातेहोयपुत्रविनपिता न तैसे॥कारणहूँमिटजायतजैकारजको जैसे ॥२०२॥

कवित्त—चेतन कहै जो कहूँ और जड होय कछु सत्य कहीं ताते जो असत्य और लहिये ॥ आनँदस्वरूपकहींतोजोशोकजानो कहूँएकतो कहूँ

जोरूजोरूपऔरगहिये॥जोकहूँअखंडखंडखंड और होय कछु, चलहोय औरतो अचलकाय कहिये॥ जानियह वेदसुखदेव नेतिनेतिकहे आपको विचार चुपचापआप रहिये ॥ २०३ ॥ अजतौकहौं जोदे·खौंऔरको जनमकहौंअक्रियकहूँजोकरतार और लहिये ॥ कूटवतकहूँजोलुहारवत होय कोउ अंत-वत् होयतोअनंतवाहि कहिये ॥ स्वप्रकाशकहूँजो देखैया औरहोय कोईब्रह्मतौकहूँ जोकोउऔरजीव गहिये ॥ गूँगो गुड खायताको स्वादनाबखान्यो जाय तैसे आपहोकोपायआपचुप्परहिये॥२०४॥

दोहा–ऐसोब्रह्मस्वरूपहै, ताहि आत्माजान ॥ अबतेरेप्रारब्धनहिं, कछूलेहिपहिचान ॥ २०५ ॥

कवित्त सोवतमें जैसेदेह धरिकै मनोरथकोपूत भयोकाहूकोखिलायोतिन्हवारते ॥ शिशुतानिवा-रचोपुनिवेदपढि चारो सब कुटुमसँभारयो काका बाबा और सारेते ॥ कहैंसुखदेवपूतनातीउपजाये

भांति भांतिनसिखायेपापपुण्यकरपारेते ॥ जागत-हींजैसे सबस्वपनेको झूठोजानै जागतकेजाने तैसे आतमविचारेते ॥ २०६ ॥ कवित्त ॥ सोवतस्वप नमांझनीचजैसे राजाहोत जागतमेंलेसताकोरंचक नदेखिये ॥ जैसेबाँझपूतकी लराईकेउराहनेकीकौ-नकहैबातकाकेउरअवरेखिये ॥ कहैसुखदेवजैसेग-गनकी गंगामांझ फूलेअरविंदताकोसौरभविशे-खिये॥ तैसेझूठजगमांहिझूठोही शरीर जान ताके कियेकर्मनकोसांच करलेखिये ॥ २०७ ॥

दोहा—ब्रह्मरूपतबहीहतो, जबहोअज्ञस्वभाय ॥ ज्ञानभयेकछुऔरनहिं, वहैब्रह्मअबआय ॥ २०८॥ भूलेकोसमुझावहीं, वेदऔरगुरुलोग ॥ करतऔर-तऔरनहिं, क्रियाकर्मके योग ॥ २०९ ॥

कवित्त—कोरीदशचले गाँवबीच नदीउतरांउ पै-रिपैरिके सुभाउ पारभ्रम आयोहै ॥ जोईगनिदेखे सोईआपको नलेखै एकबूडो अवरेखै महासो चउ

पजायोहै॥औरजबपंथीआये न्यारेन्यारे समझाये गिनिकैदशोबताये तबसुखपायोहै ॥ ऐसेसुखदेवगुरुदेवउपदेशकरि तेरोही स्वरूपफिरतोहिं समझायोहै ॥ २१० ॥

शिष्यउवाच॥दोहा—जान्योतुवपरसादतें,अपनो आतमरूप ॥ अनुभवकासोंकहतहैं, औविज्ञानअनूप ॥ २११ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥चिदसदजानतब्रह्म को, तौलगकहियतज्ञान ॥ ब्रह्मआपहीकोलखै,सो विज्ञाननिदान ॥ २१२ ॥ जैसेनरअज्ञानमें,कहत देहकोआप ॥ त्योंहींजबब्रह्मकहै,ज्ञानहृदय आलाप ॥ २१३ ॥ शिष्य उवाच मुक्तिभयोसंशय गयो, लख्योआपनोरूप ॥ रहीदेहव्यवहारसों,का विधिकरोअनूप ॥ २१४॥श्रीगुरुरुवाच॥अष्टावक्र कोवचन ॥ भांतिभांतिभोगनिकरै,फेरिदिगंबरहोय। पापपुण्यलागैनहीं ॥ ज्योंजनकादिकजोय ॥२१५ वेदांतकोवचन ॥ जीवईशअरुजगत्को, आतम

जानैजोय ॥ मनमेंआवै त्योंरहै, ताहिनरोकैकोय ॥ २१६ ॥ गीताकोवचन ॥ लोकवेदकेकर्मसब, ज्ञानीकीनेजाय ॥ याकेकर्मनदेखिकै, जक्तधर्मठहराय ॥२१७॥जैसेजबअज्ञानमें,चलतहतौजिहिरीति ॥ तैसीविधिअबहूँचलै,तजैकर्मसोंप्रीति२१८॥ कवित्त ॥ नरसोंनजन्मनधर्मवेद शासनसोंविप्रसों वरणऔर आश्रमनगेहीसों ॥ कर्मसोंना प्रबलनअबलविषैलंपटासोंजरासों भरमनभुलेआ और नेही सों ॥ गुरुसों ना वेदउपचारनाविचारऐसो अज्ञसों नरोगी अरुअसंयमानयेहीसों ॥ मनसो उपासकसुबुद्धिसों नसंगी और देहसों देनहरो नदेवऔर देहीसों ॥ २१९ ॥

दोहा-यहवेदान्तहिकोकह्यो,सबसिद्धान्तनसार । सबैसमुझियेआपमों,सबमें,आपनिहार ॥ २२०॥ लाखलाखश्लोकको, ग्रंथनमेंजुविचार॥सोमतकह्यो संक्षेपसों, भाषामाहिंनिहार२२१॥जैसेसांभरिनोंन

के,ढेरशैलसमजोय। लीनेपैसाएकभर,कार्यआपनो होय॥२२२॥हतौजुकछुमतजानवौ, जानचुकयोतू सोय॥ औरशास्त्रनकेमते,भूलनतिनतेजोय॥२२३॥ अथमीमांसा॥ यज्ञादिककर्मनकरैं, देवलोकफल भोग॥ कहतमुक्तिमीमांसिक, दुखके भये अयोग ॥२२४॥अथपातंजल॥ जीवईशन्यारोकहत,पातं-जलसबकाल॥दहैकलेशन योगकर, कहैमुक्तिसुख लाल ॥२२५॥अथसांख्यवचन।प्रकृतिपुरुष और तत्त्वको,जाकेहोयविवेक। यहै मुक्तिसोसांख्यकह, ज्ञानभयेसबएक॥२२६॥अथन्यायवैशेषिक। वैशे-षिकअरुन्यायपुनि, दोऊतारिकज्ञान॥ भेदवासना जबलखी,सोइविशेषकजान॥ २२७॥ आगमतंत्र पुराणपुनि, पंचरात्रमतजान॥ खैंचिआपनेपक्षको डारैजगमें आन॥२२८॥औरजोशास्त्रनकेमते, परै-जगतमेंजाय॥ कल्पनलौंछूटेनहीं,जन्ममृत्युतेभाय ॥२२९॥ अपनोमतयहवेदसे, सबते उत्तमजान।

ताहीकोविश्वासकरि,भूलिऔरमतमान ॥ २३० ॥ शठधूर्त औ नास्तिक, वेदविरोधीऔर ॥ तिन्हैं नभूलसुनाइये,यहमतिमतशिरमौर॥२३१॥ जिन-केउरहरिभक्तिहै, औगुरुभक्तिसमान ॥ तिनके आगे खोलिये, यहउपदेशनिधान ॥ २३२ ॥ वेद सुमृतिकेवचनको, कहिसुखदेवविलास ॥ अध्या-तमपरकाशते,तिनअध्यात्मप्रकाश॥ २३३ ॥ सं-वत्सत्रहसैवरष, पञ्चवनआश्विनजान ॥ एकादशि बुधकोभयो, शुक्लपक्षशुभमान ॥ २३४ ॥ व्यास पुत्रसुखदेवजी, संस्कृत अध्यातम् ॥ संस्कृतसों भाषा कियो, कविसुखभाषासम् ॥ २३५ ॥

इति श्रीअध्यात्मप्रकाशसंपूर्ण ।

दोहा–बडेपरिश्रमसेकियो, यापुस्तककीशुद्धि ।
भई रामकी कृपाते, मोहिंनहीं कछुबुद्धि ॥

सवैया–पियकी सुरति विसारिकैसजनीकहि कोपीहर बैठी होनार ॥ ज्ञानको घांघरापहिरलेआ-लीकपटकीचूंदरदीजेउतार ॥ सत्यकोचुरलानेहन-थुनियांनामकोलटकनलीजैसम्हार ॥ नारद पिय-नेबुलाहरीगोरीभालतिखीलिपिकोसकेटार ॥१॥

भजन–मारगमें घेरोचारठगन॥आस्ताइ॥लेलेशस्त्र खडेचारोंदिशिकाहूभांतिनहिंदेतभगन॥ १ ॥ बडे बडे ऋषिमुनिजेलूटेशिवजीकोइनकियोनगन॥२॥ नारदमुनिकोऐसेलिपटेभूलगयेसबजोगजतन ३॥

इति ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बंबई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण–बंबई.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखानेकी परमोपयोगी, स्वच्छ, शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज ४०।५० वर्षसे अधिक हुआ, भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं । इस यन्त्रालयमें प्र येक विषयकी पुस्तकें जैसे–वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, साम्प्रदायिक, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाकी प्रत्येक अवसरपर बिक्रीके अर्थ तैयार रहती हैं। शुद्धता, स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बँधाई देशभरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशन भी पृथक् काट दिया जाता है। ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असम्भव है। संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तकोंके मँगानेमें त्रुटि न करनी चाहिये। ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है. –) का टिकट भेजकर 'सूचीपत्र' मँगा देखो।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

Bhagwan Gopinath Jee Trust
Acc No 791
Date 1989
Bohri Jammu